हिन्दी साहित्य में स्त्री चेतना

संपादक : डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

ISBN : **978-81-953548-5-6**

© : संपादक

प्रकाशक : मनीष पब्लिकेशन्स
471/10, ए-ब्लॉक, पार्ट-द्वितीय,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
मो. नं. 09968762953
email : manishpublications@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2021

मूल्य : ₹ 600/-

शब्द संयोजक : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली

आवरण : अमित

मुद्रक : पूजा ऑफसेट, जगतपुरी, दिल्ली-110093

Hindi Sahitya Mein Stri Chetna
Edited by Dr. Surendra Sharma

अनुक्रम

	प्राक्कथन	7
	दो शब्द	10
1.	अज्ञेय का कथा साहित्य : स्त्री-विमर्श के आइने में **डॉ. सुरेन्द्र शर्मा**	17
2.	हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श **डॉ. ओम प्रकाश सैनी**	26
3.	महादेवी वर्मा के साहित्य में स्त्री विमर्श **डॉ0 रीना डोगरा**	35
4.	लिंगगत यौनिकता और स्त्री प्रश्न **डॉ. मुकेश कुमार मिरोठा**	40
5.	स्त्री आत्मकथा लेखन: जीवन और साहित्य का तारतम्य **राज श्री**	47
6.	सूर के भ्रमरगीत में नारी हृदय की परख **डॉ. राजेश्वरी चंद्राकर**	51
7.	मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में स्त्री-विमर्श **डॉ. शीला महन्तान**	55
8.	मन्नू भंडारी एवं बीणापाणि महांति की कहानियों में स्त्री का सामाजिक जीवन : एक तुलनात्मक दृष्टि **बनुजा मेहेर**	64
9.	कृष्णा सोबती और उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श **डॉ. ममता**	74
10.	समकालीन कविताओं में स्त्री विमर्श **डॉ. सुरेश कुमार बैरागी**	83
11.	समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श **डॉ. सुरेन्द्र शर्मा**	92
12.	पौमिला ठाकुर के 'नायिका' उपन्यास में स्त्री-विमर्श **डॉ. सतीश कुमार**	98

हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श

डॉ. ओम प्रकाश सैनी
(डी. लिट्) एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
आर.के. एस. डी. कॉलेज, कैथल
हरियाणा

स्त्री विमर्श एक वैश्विक विचारधारा है। भारत में स्त्री विमर्श बौद्धकालीन थेरी गाथाओं से होता हुआ आधुनिक काल तक अनवरत रूप में प्राप्त होता है। पौराणिक काल में मैत्रेयी और गार्गी जैसी स्वतंत्र चेता नारियों का उल्लेख मिलता है। भक्ति आंदोलन के दौरान आलवर संतों ने अछूत एवं स्त्री के लिए भक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। आठवीं सदी में अंडाल और बारहवीं सदी में अक्क महादेवी नारी स्वतंत्रता की पैरोकार बन कर खड़ी होती है। सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह का स्वर मीरा में भी देखा जा सकता है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध के दौरान विकसित होते हुए स्त्री आंदोलन को राष्ट्रवादी आंदोलन से अलग करके नहीं देखा जा सकता। राष्ट्रवादी स्वतंत्रता आंदोलन में आधी दुनिया कही जाने वाली (स्त्री) के अस्मितावादी संघर्ष को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। नवजागरण काल में स्त्री शिक्षा एवं सामाजिक सुधार को लेकर अनेक आंदोलन चले। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसाइटी जैसे संगठनों का अस्तित्व नारी सुधार के कारण ही है। ऐसे सामाजिक सुधार आंदोलनों की स्थापना से नारी शिक्षा, बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, विधवा-विवाह, सती-प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया गया। दलित एवं नारी जाति के उत्थान को लेकर महात्मा ज्योतिबा फुले एवं सावित्री बाई फुले के योगदान को कदापि भुलाया नहीं जा सकता। स्त्री अस्मिता के लिए संघर्षरत सैकड़ों महिलाएं जिनमें सरला देवी, रमाबाई, आनंदीबाई, मैरी भोरे, गोदावरी समस्कर, पार्वतीबाई, सरला देवी, भगिनी निवेदिता, सरोजिनी नायडू, भीकाजी कामा, कुमुदिनी मिश्रा, लीलावती मित्रा, जैसी साहसी महिलाओं के नाम इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हैं। स्त्रियों में सामाजिक चेतना और अधिकारों के प्रति सजग विदेशी महिला एनी बेसेंट ने कहा था 'पुरुष का अधिकार एक स्वीकार्य सिद्धांत बन चुका है, परंतु दुर्भाग्यवश विश्व के विशेष दृष्टिकोण में वह केवल पुरुषों का अधिकार है। यह अधिकार लैंगिक आधार है न